पंचम अध्याय

पंचम अध्याय

''विवेच्य कहानियों का शिल्पगत अध्ययन''

अनुक्रमणिका

5.1 शिल्प के तात्पर्य

5.2 विवेच्य कहानियों में प्रयुक्त शिल्प

5.2.1 कथावस्तु और शिल्प

5.2.2 चरित्र चित्रण और शिल्प

5.2.3 कथोपकथन और शिल्प

5.2.4 परिवेश और शिल्प

5.2.5 भाषा और शिल्प

5.3 विवेच्य कहानियों में प्रयुक्त शब्द और मुँहावरे

5.3.1 संस्कृत शब्द

5.3.2 देशज शब्द

5.3.3 अरबी शब्द

5.3.4 फारसी शब्द

5.3.5 अंग्रेजी शब्द

5.3.6 मुँहावरे

5.4 विवेच्य कहानियों में प्रयुक्त शैली

5.4.1 वर्णनात्मक शैली

5.4.2 आत्मकथात्मक शैली

5.4.3 पत्रात्मक शैली

5.4.4 भाषण शैली

5.4.5 व्यंग्यात्मक शैली

5.4.6 प्रतीकात्मक शैली

5.4.7 भावात्मक शैली

5.4.8 विचार प्रधान शैली

निष्कर्ष

पंचम अध्याय

''विवेच्य कहानियों का शिल्पगत अध्ययन''

प्रस्तावना

पिछले अध्याय में हमने विवेच्य कहानियों की विभिन्न यथार्थ समस्याओं पर प्रकाश डाला है । प्रस्तुत अध्याय में हम विवेच्य कहानियों का शिल्पगत अध्ययन करेंगे । इस अध्याय में कहानियों की कथावस्तु, चरित्र–चित्रण, कथोपकथन, परिवेश या वातावरण, शैली आदि का शिल्प की दृष्टि से विवेचन–विश्लेषण करेंगे । अत: इस विवेचन – विश्लेषण से पहले 'शिल्प' का अर्थ समझना आवश्यक है ।

5.1 'शिल्प' से तात्पर्य :

साहित्य मानवी भाव–भावनाओं को अभिव्यक्त करने का सशक्त माध्यम है । मानवी भाव–भावनाओं को केवल भाषाबद्ध नहीं किया जा सकता । अत: उसे कलात्मक ढंग से प्रस्तुत करने से ही उसका पाठक पर प्रभाव पड़ता है । अर्थात भाषाबद्ध रचना में रोचकता, आकर्षण और चीर प्रभाव निर्माण करने के लिए साहित्यकार शिल्प का आधार लेता है ।

'शिल्प' शब्द अंग्रेजी भाषा के 'टेकनीक' शब्द का हिंदी रूपांतरण है । यह शब्द 'शिल्प्' शब्द और 'पक्' प्रत्यय से निर्मित है । हिंदी शब्द सागर में 'शिल्प' शब्द का अर्थ है ''हाथ से कोई चीज बनाकर तैयार करने का काम । दस्तकारी । कारीगरी ।''[1] बटरोही 'शिल्प' की व्याख्या इस प्रकार करते हैं – ''शिल्प का संबंध मुख्यत: वर्णित की जाने वाली विषय–वस्तु से है यानी जो भाव वर्णित किया जा रहा है उसे अधिक से अधिक स्वाभाविक ढंग से किस प्रकार प्रस्तुत किया जाय । प्रस्तुत किये जाने का यही ढंग शिल्प कहलाता है ।''[2]

शिल्प का संबंध रचना के आन्तरिक एवं बाह्य पक्ष से होता है । रचना का अंतरिक पक्ष अर्थात रचनाकार की मन:स्थिति एवं अनुभूति हैं । रचना का बाह्य पक्ष अर्थात रचनाकार की अनुभुतियाँ शब्दबद्ध होकर पाठक के सामने आना है । डॉ. गोरधनसिंह शेखावत शिल्पविधि के बाह्य पक्ष के बारे में कहते हैं – ''यह शिल्पविधि का मूर्त एवं साकार रूप होता है । इसके आधार पर रचना की शिल्पविधि का विश्लेषण किया जा सकता है कि उसमें कितनी सूक्ष्मता, जटिलता एवं दुर्बोधता है तथा कथ्य को सम्प्रेषणीय बनाने के लिए वह कहां तक सफल हुई है ।''[3]

रचनाकार जीवन के किसी भी एक घटना से प्रभावित होकर रचना की निर्मिती करता है । वह अपनी रचना को आकर्षित एवं प्रभावी बनाने के लिए विविध उपकरणों एवं साधनों का प्रयोग करता है । अत: इन

---

1. (संपा.) श्यामसुंदरदास – हिंदी शब्द सागर, नवाँ भाग, पृ. 4751
2. बटरोही – कहानी रचना – प्रक्रिया और स्वरूप, पृ. 59
3. डॉ. गोरधन सिंह शेखावत : नयी कहानी उपलब्धि और सीमाएँ, पृ. 166

साधनों एवं उपकरणों को ही रचना के शिल्पतत्त्व कहा जाता है । डॉ. पाण्डेय शशिभूषण 'शीतांशु' के अनुसार ''सार्थक अभिव्यक्ति को कलात्मक मोड़ देना ही शिल्प है ।''[4]

5.2 विवेच्य कहानियों में प्रयुक्त शिल्प :

विवेच्य कहानियों में कथावस्तु, चरित्र–चित्रण, कथोपकथन, वातावरण, शैली, प्रतीक आदि की दृष्टि से शिल्प का प्रयोग इस प्रकार हुआ है –

5.2.1 कथावस्तु और शिल्प :

कहानीकार कथावस्तु का चुनाव इतिहास, पुराण अथवा दैनिक जीवन की घटनाओं से करता हैं । कथावस्तु का कहानी में वही स्थान है जो शरीर में अस्थियों का । कथावस्तु ही शिल्प का प्रमुख आधार है । अशोक कुमार गुप्ता के अनुसार ''कथानक एक ऐसा तत्त्व है जिसके अभाव में शिल्प स्वरूप की विवेचना ही नहीं की जा सकती । ... किसी भी कहानी की सफलता उसकी कथावस्तु पर और किसी भी कथावस्तु की सफलता उसके शिल्प पर निर्भर करती है ।''[5] कथावस्तु में संक्षिप्तता, रोचकता, क्रमबद्धता, कल्पना, संवेदना, संघर्ष, करूणा, कौतूहल, सत्य का उद्घाटन आदि विशेषताओं का होना अनिवार्य है ।

कहानी का आरंभ सैकड़ों प्रकार से होता है । कहानी का प्रथम वाक्य या आरंभ ही पाठकों पर प्रभाव डालता है । विवेच्य कहानियों मे से 'पुस्तकालय प्रसंग', 'प्रिंसिपल', 'अन्धेरे के कैदी', 'स्कूलगाथा' आदि कहानियों का आरंभ पाठकों पर प्रभाव डालता है । 'पुस्तकालय प्रसंग' कहानी का आरंभ इस प्रकार है – ''धर्मधुरीण सन्तों !

अब मैं तुम्हें प्रोफेसर मंगतूराम के पुस्तकालय – प्रवेश का परम रोचक वृत्तान्त सुना रहा हूँ, इसे श्रद्धापूर्वक मन लगाकर सुनो ।''[6]'अन्धेरे के कैदी' कहानी का आरंभ इस प्रकार है – ''खट ... खट ... खट ! टाइप हो रही है । की बोर्ड पर एकदम अभ्यस्त उँगलियाँ बार – बार दबाव डाल रही है ।''[7]

कहानी में मध्य या विकास का भी महत्व होता है । कहानी के मध्य किसी समस्या या संघर्ष का उद्घाटन होता है । 'दिशाहीन', 'मदारी', 'संदर्भ', 'राख हो चुका समय' आदि कहानियों में संघर्ष एवं समस्या का चित्रण कलात्मक ढंग से किया है । 'मदारी' कहानी में प्रिंसिपल पारसनाथ की माँगे अस्वीकार करते हुए कहता है ''देखो पारसनाथ, ये व्यवस्था कालेज से संबंधित है, और मेरा ख्याल है तुम लोगों की दखलन्दाजी ठीक नहीं है ।''[8] यहाँ उनकी बात बिगड़ती है और कालेज में तोड़–फोड़ शुरू होती है ।

---

4. डॉ. पाण्डेय शशिभूषण 'शीतांशु' : नयी कहानी के विविध प्रयोग, पृ. 230
5. अशोक कुमार गुप्ता : जयशंकर प्रसाद की कहानियों का शिल्प विधान, पृ. 3
6. (संपा.) गिरिराज शरण : शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 11
7. (संपा.) गिरिराज शरण : शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 37
8. (संपा.) गिरिराज शरण : शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 118

विवेच्य कहानियों में से 'ट्युशन' कहानी का अंत दु:खान्त हुआ है । जैसे ''अंगुलियों में उठी पुस्तक और ऊपर उठ गयी, कहीं कोई छात्र उसकी गीली आँखों को न पढ़ ले ।''[9] 'पुस्तकालय प्रसंग' कहानी का अंत कबीर के एक दोहे से हुआ है । ' दिशाहीन' कहानी का अंत एक काव्य पंक्ति से हुआ है । जैसे -

''उत्तरदायी कौन है ? नहीं बता सकता ...
पता नहीं कहाँ जाऊँगा, मैं दिशाहीन ...''[10]

'प्रिंसिपल', 'स्कूलगाथा', 'आलू की आँख', 'राख हो चुका समय' आदि कहानियों में कहानीकारों ने कथानक में कौतूहल, उत्सुकता, कलात्मकता तथा काल के व्यवधान को सूचित करने के लिए कहानियों को छोटे छोटे खंडों में विभाजित किया है ।

5.2.2 चरित्र–चित्रण और शिल्प :

कथावस्तु को अभिव्यक्त करने में पात्रों का विशिष्ट योगदान रहता है । पात्रों की सफलता – असफलता शिल्पविधि पर निर्भर नहीं होती बल्कि कहानीकार की अनुभूति, जीवन की ओर देखने की दृष्टि और संवेदना पर निर्भर होती है । सामान्यत: कहानीकार निम्नांकित तरिकों से पात्रों का चरित्र – चित्रण करता है –

(i) स्वयं के वर्णन द्वारा
(ii) पात्रों के स्वयं के संवादों द्वारा
(iii) पात्रों के कार्यों द्वारा

उक्त तीन तरिकों में से अंतिम तरिका अर्थात पात्रों के कार्यों द्वारा पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं को स्पष्ट करना अधिक श्रेष्ठ माना जाता है । विवेच्य कहानियों में कहानिकारों ने उक्त तीनों तरिकों को अपनाया है । 'प्रिंसिपल' कहानी में कहानीकार स्वयं नरपत की चारित्रिक विशेषताएँ इस प्रकार चित्रित करता है – ''वह नरपत था । सिर झुकाये चलने वाला । धीमा स्वर, उदास लहजा । बातें करते आँखे चुराता रहता । भली–बुरी को मुस्करा कर टाल देता । होते हुए भी न होने का अहसास दिलानेवाला । सीधा–साधा भोला–भाला ।''[11]

'संदर्भ', 'राख हो चुका समय', 'प्रिंसिपल', 'उपनिवेश' आदि कहानियों में कहानिकारों ने पात्रों के कार्यों द्वारा उनकी चारित्रिक विशेषताएँ उद्घाटिक की हैं । जैसे 'संदर्भ'कहानी में शुभ्रा की चारित्रिक विशेषताओं का उद्घाटन उसके कार्यों द्वारा होता है । 'राख हो चुका समय' कहानी में डॉ. दत्त पति–पत्नी और उनकी छात्रा मणि की चारित्रिक विशेषताएँ भी उनके कार्यों द्वारा उद्घाटित होती है । लेकिन 'पुत्र' कहानी का प्रोफेसर अपनी चारित्रिक विशेषताएँ स्वयं बताता हैं । जैसे – ''जी, मैं गौरमिण्ट कालेज हिसार में फिजिक्स का प्रोफेसर हूँ । .... आपने प्रोफेसर सर सन्तराम शर्मा का नाम सुना होगा ... हिस्ट्री की किताबों के

---

9. (संपा.) गिरिराज शरण : शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 80
10. (संपा.) गिरिराज शरण : शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 190
11. (संपा.) गिरिराज शरण : शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 20

लेखक ... जी, उनका लड़का हूँ । ... मैंने बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी से एम. एस. सी. किया था सन बावन में । फर्स्ट क्लास आया था मेरा । ... मैं जहाँ भी कांटेस्ट करता हूँ सिर्फ अपनी मैरिट पर करता हूँ ।[12]

'इसी शहर में' कहानी में कहानीकार ने नारंगीलाल और रणजीत के संवादों के माध्यम से उस्ताद और बॅनर्जी के चरित्र पर प्रकाश डाला है । जैसे – ''– हाँ गुरू वहाँ उस्ताद और बॅनर्जी है, दोनों ही एक नंबर हैं ।

– दोनों ही गधे हैं, उल्लू के पट्ठे । वे क्या करेंगे अरे मैं होता तो दिखा देता पुलिस वालों को नाकों से चना चबवा देता पर क्या कहूँ यह रक्षाकोरिया ... ।''[13]

आधुनिक युग में कहानीकार पात्रों की चारित्रिक विशेषताएँ स्पष्ट करने के लिए मनोविज्ञान का आधार लेते हैं । मनोविज्ञान के कारण पात्रों के भावों का, विचारों का एवं मानसिक द्वंद्व आदि का सूक्ष्म चित्रण किया जाता है । हरिओम की चारित्रिक विशेषताएँ स्पष्ट करने के लिए 'दिशाहीन' कहानी में कहानीकार ने म्नोविज्ञान का आधार लिया है ।

5.2.3 कथोपकथन और शिल्प :

कथोपकथन या संवाद कथानक को आगे बढ़ाने, बीती घटनाओं की सूचना या पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं को उद्घाटित करता है । कहानीकार अपनी रचना में कथोपकथन के अनेक प्रकारों का प्रयोग करता है । अशोक कुमार गुप्ता के शब्दों में ''कथोपकथन कहानी शिल्प का वह उपकरण है जिससे कथावस्तु परिष्कृत, सजीव सटीक एवं अभिनव बनती है ।''[14]

'टयूशन' कहानी के संवाद छोटे–छोटे हैं । इस कारण कहानी में रोचकता आयी है । दामोदर बाबू और उनकी पत्नी के संवाद इस प्रकार हैं –

'' ''कहो !''

''कोई और काम कर लो न !''

''क्या ?''

''कोई भी ।''

''और नौकरी ?'' वह कुछ परेशान हुआ ।

''छोड़ दो ।''

''गुजारा ?''

''चल जाएगा । देखते नहीं, मंगू पानवाला भी कैसे हँसी–खुशी अपने परिवार को पाल रहा है ।''

''पान की दुकान कर लू !'' ''[15]

---

12. (संपा.) गिरिराज शरण : शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 81
13. (संपा.) गिरिराज शरण : शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 155
14. अशोक कुमार गुप्ता : जयशंकर प्रसाद की कहानियों का शिल्प, पृ. 4
15 . (संपा.) गिरिराज शरण : शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 75

'इसी शहर में' कहानी में जब बुढ़िया प्रिंसिपल की गाडी से टकराकर जमीन पर गिर जाती है, तब कॉलेज के छात्र वहाँ जमा होते हैं । इस घटना पर वे आपस में इस प्रकार बातें करते हैं –

''अभी यह मरी नहीं है ।

- तुम वहाँ बैठ क्यों गए ? अलग हट जाओ ।

- इसे अस्पताल ले जाना चाहिए ।

- यह नहीं बचेगी ।

- तुम डॉक्टर हो क्या ?

- नहीं मैं इसी कॉलेज का क्लर्क हूँ ।

- तो तुम कागज – कलम लगाकर बैठ जाओ और हिसाब लगाओ कि यह और कितनी साँसे लेती और कितनी छोड़ती है । पर खबरदार, हाथ मत लगाना इसे ।''[16]

उक्त संवाद छात्रों की मानसिकता और वैचारिक अपरिपक्वता को स्पष्ट करते हैं । अर्थात कहानीकार ने पात्रों के वय और परिस्थिति के अनुकूल संवादों की योजना की है ।

'पुस्तकालय प्रसंग' कहानी में मंगतूराम और ग्रंथपाल के संवाद इस प्रकार हैं – ''मैं प्रोफेसर मंगतूराम हूँ, यहाँ हिंदी का अध्यापक नियुक्त हुआ हूँ ।''

''बड़ी खुशी की बात है ।''

''मैं यहाँ कुछ पुस्तकें लेने आया हूँ ।''

''तो लीजिए ।''

''पुस्तकें कहाँ हैं ?''

''मैं उन्हें किस प्रकार देख सकता हूँ ।''

''टटोलकर ।''

''यहाँ बड़ अन्धेरा है, बिजली जलवाइये ।''

''यहाँ बिजली नहीं है ।''

तो मैं क्या करूँ ?''

''अलमारियों से किताबें निकाल लाइये, मैं आपके नाम इशू कर दूँगा ।''[17]

उक्त संवाद से दोनों की पुस्तकों की ओर देखने की दृष्टि स्पष्ट होती है । साथ ही मंगतूराम का बावलापन और ग्रंथपाल की लापरवाही दिखाई देती है ।

---

16. (संपा.) गिरिराज शरण : शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 151, 152
17. (संपा.) गिरिराज शरण : शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 14, 15

5.2.4 परिवेश और शिल्प :

कहानी में सामाजिक वातावरण के साथ–साथ प्राकृतिक वातावरण का भी चित्रण किया जाता है । परिवेश या वातावरण के अनुसार भाषा शैली में परिवर्तन होता है । इस परिवर्तन के कारण ही कहानी स्वाभाविक बनती है । परिवेश के संदर्भ में डॉ. गोविंद त्रिगुणायत का मत इस प्रकार है – ''वातावरण वास्तव में दर्शक के मस्तिष्क पर पडने वाला वह प्रभाव है जो देश, काल और व्यक्ति की पारस्पारिक अनुरूपता से उत्पन्न होता है ।''[18] कहानी के परिवेश के बारे में बटरोही कहते हैं – ''कहानी, सामाजिक परिवेश में से ही जन्म लेती है और एक प्रकार से वह भिन्न स्वरूप के साथ सामाजिक परिवेश का ही प्रतिबिंब होती है ।''[19]

'वजूद' कहानी में प्राथमिक विद्यालय का वातावरण, 'ट्यूशन' कहानी में माध्यमिक विद्यालय का वातावरण, 'मदारी' कहानी में महाविद्यालय का वातावरण, 'संदर्भ' और 'इतना बड़ा पुल' कहानी में विश्वविद्यालय का वातावरण कहानिकारों ने कलात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है ।

'संदर्भ' कहानी में विश्वविद्यालय के एक व्याख्यान कक्ष में अध्यापक और छात्रों के तणावपूर्ण परिस्थिति का चित्रण कहानीकार ने इस प्रकार किया है – ''एक अकारण हँसी के क्षीण विस्फोट के साथ मैंने कक्षा में प्रवेश किया था । सामान्य बने रहकर उपस्थिति ली और फिर भाषण शुरू किया, तभी एक विद्यार्थी उठा, सर मेरा एक प्रश्न, कहकर, क्षण के लिए प्रतीक्षा की तभी मैंने कहा, देखिए, पहिले मुझे बोलने दोजिए फिर आप प्रश्न कीजिएगा, बिना किसी रोष के मैंने कहा था । लेकिन, प्रश्न पूछने का अवसर ही कब देंगे आप, लेक्चर तो कई रोज चलेगा, अपने अड़ियल तेवर में वह विद्यार्थी बोला ।''[20]

5.2.5 भाषा और शिल्प :

कहानीकार भाषा के माध्यम से ही अपने विचारों एवं उद्देश्यों को पाठकों के समक्ष रखता है । अर्थात भाषा के बिना अभिव्यंजना संभव नहीं । कहानी की भाषा देश, काल एवं पात्रानुकूल होनी चाहिए । कठिन, बोझिल, अलंकारिक भाषा का प्रयोग त्याज्य माना जाता है । 'स्कूलगाथा' कहानी में बिल्कुल सहज एवं सरल भाषा का प्रयोग किया है । जैसे ''गाँव है । स्कूल है । स्कूल का चौगाना है । चौगान में कतारें हैं । कतारों में लड़कें हैं । लड़कों में फुसफुसाहटें हैं । फुसफुसाहटों में आतंक और उत्साह है ।''[21]

'दिशाहीन' कहानी में कहानीकार ने कहानी में रोचकता लाने के लिए माँ–बेटे के सौहार्दपूर्ण व्यवहार को स्थानीय बोली में इस प्रकार प्रस्तुत किया है –

''अलिफ – बे अब्ब ।

---

18. डॉ. गोविंद त्रिगुणायत, शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धांत,द्वितीय भाग,पृ.472, 473
19. बटरोही – कहानी रचना – प्रक्रिया और स्वरूप, पृ. 54
20. (संपा.) गिरिराज शरण : शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 122
21. (संपा.) गिरिराज शरण : शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 90

माई खाना देगी कब्ब ?

बेटा पढ़के आईबे तब्ब ।..." [22] 'इसी शहर में' कहानी में एक अनपढ़ बुढ़िया की भाषा इस प्रकार है – "जा मुआ, यहाँ का बैठा है । अपना बाप–ददवा के पास जा ना ! ओ गेटवा पर दूर – दूर ।"[23]

'अन्धेरे के कैदी' कहानी में प्रिंसिपल महोदया कार्यालय में गोरखा रवि बहादुर के साथ इस भाषा में व्यवहार करती है – "मान लिया तुमने ऐसा नहीं किया । रसीद तब मिलेगी जब कोठी साफ होगी । गुलदस्ते सजे होंगे । जाओ, माली को साथ लेकर सफाई करो । आज मेरी बच्ची का जन्म दिन है । जल्दी जाओ समझे !"[24]

5.3 विवेच्य कहानियों में प्रयुक्त शब्द :

विवेच्य कहानियों में संस्कृत, देशज, अरबी, फारसी, अंग्रेजी शब्दों के प्रयोग किए गए हैं । वे शब्द इस प्रकार हैं –

5.3.1 संस्कृत शब्द :

विवेच्य कहानियों में संस्कृत शब्दों का प्रयोग इस प्रकार हुआ है – "पुस्ताकालय"[25], "दिन"[26], "वत्स्"[27], "अध्यापक"[28], "केवल"[29] ।

5.3.2 देशज शब्द :

विवेच्य कहानियों में देशज शब्दों का प्रयोग अत्यल्प मात्रा में हुआ है । वे इस प्रकार हैं – "बलन"[30], "अइबे"[31], "नतीऊ"[32], "लइहें"[33], "करिहे"[34], "परीसनपालवा"[35] ।

---

22. (संपा.) गिरिराज शरण : शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 168
23. (संपा.) गिरिराज शरण : शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 149
24. (संपा.) गिरिराज शरण : शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 45
25. (संपा.) गिरिराज शरण : शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 11
26. (संपा.) गिरिराज शरण : शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 25
27. (संपा.) गिरिराज शरण : शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 21
28. (संपा.) गिरिराज शरण : शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 25
29. (संपा.) गिरिराज शरण : शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 74
30. (संपा.) गिरिराज शरण : शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 140
31. (संपा.) गिरिराज शरण : शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 108
32. (संपा.) गिरिराज शरण : शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 148
33. (संपा.) गिरिराज शरण : शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 148
34. (संपा.) गिरिराज शरण : शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 148
35. (संपा.) गिरिराज शरण : शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 150

5.3.3 अरबी शब्द :

विवेच्य कहानियों में अरबी शब्दों का प्रयोग इस प्रकार हुआ हैं – ''लहजा''[36], ''वफादार''[37], ''अजीब''[38], ''मुकाबला''[39], ''गदर''[40], ''पुलिस''[41], ''किताब''[42], ''तबादला''[43] ।

5.3.4 फारसी शब्द :

विवेच्य कहानियों में फारसी शब्दों का प्रयोग इस प्रकार हुआ हैं – ''दफ्तर''[44], ''गिरफ्त''[45], ''रसीद''[46], ''बीमार''[47], ''दुरूस्त''[48], ''बर्दाश्त''[49] ।

5.3.5 अंग्रेजी शब्द :

विवेच्य कहानियों में अंग्रेजी शब्दों का प्रचुर मात्रा में प्रयोग हुआ हैं – ''लेक्चरर''[50], ''फ्रॉड''[51], ''आफिस''[52], ''टेबल''[53], ''इण्टरव्यू''[54], ''डिगनीफाइड''[55], ''वेकेंसी''[56], ''वेस्टेज''[57], ''नेशनल''[58], ''ग्रेड''[59], ''पीरियड''[60] ।

5.3.6 मुँहावरे :

विवेच्य कहानियों में संस्कृत, देशज, अरबी, फारसी आदि शब्दों के साथ–साथ मुहावरों का भी प्रयोग हुआ है । वे इस प्रकार हैं । ''कन्नी काटना''[61], ''रात–दिन एक

---

36. (संपा.) गिरिराज शरण : शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 21
37. (संपा.) गिरिराज शरण : शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 25
38. (संपा.) गिरिराज शरण : शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 26
39. (संपा.) गिरिराज शरण : शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 115
40. (संपा.) गिरिराज शरण : शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 109
41. (संपा.) गिरिराज शरण : शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 108
42. (संपा.) गिरिराज शरण : शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 109
43. (संपा.) गिरिराज शरण : शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 23
44. (संपा.) गिरिराज शरण : शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 56
45. (संपा.) गिरिराज शरण : शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 54
46. (संपा.) गिरिराज शरण : शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 55
47. (संपा.) गिरिराज शरण : शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 117
48. (संपा.) गिरिराज शरण : शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 114
49. (संपा.) गिरिराज शरण : शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 114
50. (संपा.) गिरिराज शरण : शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 60
51. (संपा.) गिरिराज शरण : शिक्षा जगत की कहानियाँ, पृ. 60
52. (संपा.) गिरिराज शरण : शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 53
53. (संपा.) गिरिराज शरण : शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 53
54. (संपा.) गिरिराज शरण : शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 83
55. (संपा.) गिरिराज शरण : शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 83
56. (संपा.) गिरिराज शरण : शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 82
57. (संपा.) गिरिराज शरण : शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 82
58. (संपा.) गिरिराज शरण : शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 82
59. (संपा.) गिरिराज शरण : शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 82
60. (संपा.) गिरिराज शरण : शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 121
61. (संपा.) गिरिराज शरण : शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 20

करना''[62], ''लानत भेजना''[63], ''दाँत किटकिटाना''[64], ''फबती कहना''[65], ''चुप साधना''[66], ''मक्खन लगाना''[67], ''खिलखिलाकर हँसना''[68], ''गायब कर देना''[69] ।

5.4 विवेच्य कहानियों में प्रयुक्त शैली :

किसी बात के कहने या लिखने के विशेष ढंग या तरीके को शैली कहा जाता है । विवेच्य कहानियों में वर्णनात्मक, आत्मकथात्मक, पत्रात्मक, भाषण, व्यंग्यात्मक, प्रतीकात्मक, भावात्मक और विचार प्रधान शैलियों का प्रयोग हुआ है ।

5.4.1 वर्णनात्मक शैली :

यह शैली सबसे तरल एवं प्राचीन है । इसमें विचारों एवं घटनाओं का विशद वर्णन होता है । 'उपनिवेश', 'गोकुल', 'स्कूलगाथा', 'आलू की आँख' , 'इतना बड़ा पुल' आदि कहानियों में वर्णनात्मक शैली का प्रयोग हुआ है ।

'स्कूलगाथा' कहानी में कहानीकार ने विद्यालय के बाह्य वातावरण का वर्णन इस प्रकार किया है – ''गाँव है, स्कूल है, स्कूल के सामने काफी बड़ा चौगान है । चौगान में कतारें हैं । कतारों में लड़कें हैं । लड़के – दुबले, मोटे, नाटे, लम्बे, गोरे, काले, गेरूए – सब तरह के लड़के । लड़कों में फुसफुसाहट है । फुसफुसाहट में उत्सुकता है । लड़कों की उत्सुक नजरें सामने चबूतरे पर गड़ी है ।''[70]

'आलू की आँख' कहानी में इस शैली का प्रयोग इस प्रकार हुआ है – ''स्कूल भवन नया नया था । गाँवों में शिक्षा–प्रसार के हमारे पावन उद्देश्यों का ताजा प्रमाण । भवन को भिगोकर एक बरसात गुजर चुकी थी । बाहरी दीवारों पर पानी की चोटें निखरी हुई थीं । जो काई दीवारों पर उग आयी थी, वह कलियाने लगी थी । चारों तरफ काफी बड़ा अहाता था ।''[71]

5.4.2 आत्मकथात्मक शैली :

इसमें कहानीकार प्रथम पुरूष में कथा का वर्णन करता है । इस शैली में केवल एक ही पात्र विशेष का चित्रण रहता है । पात्र अपने अनुभव स्वयं कथन करता है । 'मामला एक रूष्ट अंतरात्मा का ' और 'पुत्र' इन दो कहानियों में आत्मकथात्मक शैली पायी जाती है ।

---

62. (संपा.) गिरिराज शरण : शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 20
63. (संपा.) गिरिराज शरण : शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 48
64. (संपा.) गिरिराज शरण : शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 48
65. (संपा.) गिरिराज शरण : शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 50
66. (संपा.) गिरिराज शरण : शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 53
67. (संपा.) गिरिराज शरण : शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 93
68. (संपा.) गिरिराज शरण : शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 124
69. (संपा.) गिरिराज शरण : शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 128
70. (संपा.) गिरिराज शरण : शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 87
71. (संपा.) गिरिराज शरण : शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 101

'मामला एक रूष्ट अंतरात्मा का' कहानी का उदाहरण – ''अब मैं क्या बतलाऊँ आप लोगों को ! कल रात सोते मोते मैं बाजार की तरफ जा निकला । शहर की सारी दूकाने यो ही खुली पड़ी थीं । बजाजों, सर्राफों, बिसातियों की दूकानों पर एक चिड़िया तक नहीं थी । मैं इस परिवर्तन को हैरानी से देखते हुए इधर–उधर घूमता रहा ।''[72]

5.4.3 पत्रात्मक शैली :

इसमें कहानीकार पत्रों के माध्यम से कहानी प्रस्तुत करता है । 'राख हो चुका समय' कहानी में इस शैली का प्रयोग किया है । जैसे :–

''आदरणीय दीदी,

सादर प्रणाम,

अत्र कुशलं तत्रास्तु । विश्वविद्यालय से मैंने पीएच्.डी. का सर्टिफिकेट मँगा लिया है । दूसरी विशेष बात मुझे कन्फर्म कर दिया गया है । अब मैं एक दूसरे विषय में एम. ए. करना सोच रही हूँ, कैसा रहेगा ?

पत्र की प्रतीक्षा में सदैव आपकी ही

छोटी बहन तरला ।''[73]

5.4.4 भाषण शैली :

इसमें कहानीकार भाषणों के माध्यम से कहानी प्रस्तुत करता है । इस शैली का प्रयोग 'प्रिंसिपल' और 'परथम श्रेणी सबको दो' इन कहानियों में हुआ है । 'परथम श्रेणी सबको दो' कहानी का उदाहरण इस प्रकार है – ''जिसमें अन्याय का प्रतिरोध करने का साहस नहीं हो, वह अभी इसी समय यहाँ से उठकर चला जाये । हमें आन्दोलन में कायरों की कोई जरूरत नहीं है ।''[74]

5.4.5 व्यंग्यात्मक शैली :

यह सबसे अधिक प्रभावी शैली है । इसमें कहानीकार व्यंग्य के माध्यम से सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार करता है । इस शैली का प्रयोग 'पुस्तकालय प्रसंग' कहानी में किया है । निगम साहब पुस्तकों का उपयोग न करनेवाले अध्यापकों पर व्यंग्य करता है । जैसे –

''घर में तकिया है, वत्स ?''

''है'' मंगतूराम ने बताया ।

''उसे हटा दो । पुस्तकें तकिए के रूप में बड़ी उपयोगी सिद्ध हुई हैं ।''

''ताश खेलते हो ?'' उन्होंने फिर पूछा ।

''कभी – कभी ।''

---

72. (संपा.) गिरिराज शरण : शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 192
73. (संपा.) गिरिराज शरण : शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 136
74. (संपा.) गिरिराज शरण : शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 94

''प्वाइण्ट्स का हिसाब पुस्तकों के फ्लैपर के भीतरी भाग में लिख सकते हो ।''

तनिक विश्राम ले निगम साहब आगे बढ़े – ''बच्चे हैं ?''

''नहीं''

''तो पडोसी के बच्चों को पुस्तकों के रंगीन चित्र बाँटकर 'मंगतू अंकल' के रूप में ख्याति अर्जित करो ।''[75]

इस प्रकार कहानीकार ने पुस्तकों का उपयोग न करनेवाले अध्यापकों की मनोवृत्ति पर व्यंग्य किया है ।

5.4.6 प्रतीकात्मक शैली :

इस शैली में कहानीकार कुछ प्रतिकों का उपयोग कर कहानी को गति या रोचकता लाने का प्रयास करता है । 'अन्धेरे के कैदी' कहानी में कहानीकार ने एक लोककथा का प्रयोग किया है । यह लोककथा प्रतीकात्मक है । लोककथा का सारांश इस प्रकार है – एक राक्षस की कैद में एक राजकुमार है । राजकुमार लाख प्रयास करने पर भी उसकी कैद से मुक्त नहीं हो पाता । ''राक्षस की कैद से राजकुमार छूटा नहीं । लगता है जैसे वह दूसरे अन्धेरे में भाग रहा हो ।

चलते–चलते सोचता हूँ – शायद आजकल राक्षस की कैद में रहना ही हसीन जिन्दगी हो ।''[76] प्रिंसिपल, प्रबंधक, संस्थापकों का प्रतीक राक्षस है और अध्यापक और कर्मचारी राजकुमार के प्रतीक हैं ।

5.4.7 भावनात्मक शैली :

'राख हो चुका समय' कहानी में भावात्मक शैली का प्रयोग किया है । डॉ. दत्त पति–पत्नी तरला के पत्र का इंतजार करते करते थक गए हैं । वे तरला के पत्र द्वारा उसकी सिर्फ खुशहाली जानना चाहते हैं । ''पागल हे, क्यों सोच रही हो, कि तुमने किसी को अपने बच्चे जैसा प्यार दिया था, बच्चे तक आजकल माँ बाप को नहीं पूछते, वह तो पराई लड़की धी ।

'पराई लड़की थी, इसीलिए सोच रही हूँ इतना।'

'क्यों चाहती हो, कि कोई तुम्हारा गुणगान करे, तुमने किसी के लिए कुछ किया है 'भूल जाओ उसे ।'

'' ... ''

''सच बताइये, आपको जरा भी बुरा नहीं लग रहा ?''[77]

5.4.8 विचार प्रधान शैली :

प्रत्येक लेखक का अपना एक जीवन दर्शन होता है । कभी–कभी वह अपने विचारों को किसी पात्र के माध्यम से व्यक्त करता है । 'कोलाहल' और 'दिशाहीन' इन दो कहानियों में विचार प्रधान शैली का प्रयोग किया है । 'दिशाहीन' कहानी में हरिओम अपने मित्र से कहता है – ''मेरे संस्कार मूल भारतीय संस्कार हैं जो मेरे

---

75. (संपा.) गिरिराज शरण : शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 18, 19
76. (संपा.) गिरिराज शरण : शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 49
77. (संपा.) गिरिराज शरण : शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 134

गुरूजनों ने डाले हैं । उन्होंने मुझे अपने देश, धर्म भाषा का आदर करना सिखाया है । मेरे सामने 'सिंपल – लिविंग एण्ड हाई थिंकिंग' का आदर्श रखा है ।''[78]

निष्कर्ष :

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि विवेच्य कहानियों में कहानिकारों ने 'शिल्प' का प्रयोग कलात्मक ढंग से किया है । उन्होंने कथावस्तु को गति देने के लिए या रोचकता लाने के लिए अंतर्कथाओं का भी समावेश किया है । कहानियों की भाषा सरल, भावात्मक एवं पात्रानुकूल है । कहानियों के पात्र और संवाद शिक्षा जगत के यथार्थ को प्रस्तुत करने में सफल हुए हैं । भाषा को परिष्कृत, परिनिष्ठित भावानुकूल एवं पात्रानुकूल बनाने के लिए संस्कृत, देशज, अरबी, फारसी, अँग्रेजी और मुहावरों का सार्थक प्रयोग किया है । प्रत्येक कहानी में एक से अधिक शैली का प्रयोग हुआ है । पत्रात्मक शैली का प्रयोग केवल एक ही कहानो में हुआ है । विवेच्य कहानियों में व्यंग्यात्मक शैली प्राठकों पर अधिक प्रभाव डालती है । इस प्रकार विवेच्य कहानियों में शिल्प का सार्थक प्रयोग हुआ है ।

---

78. (संपा.) गिरिराज शरण : शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 179